आदर्शवाद, प्रकृतिवाद व प्रयोजनवाद का तुलनात्मक अध्ययन

(COMPARATIVE STUDY OF IDEALISM, NATURALISM AND PRAGMATISM)

1. आधारभूत सिद्धान्त (Fundamental Principles)

आदर्शवाद (Idealism)	प्रकृतिवाद (Naturalism)	प्रयोजनवाद (Pragmatism)
1. यह एक तत्ववादी (Monistic) है।	1. यह भी तत्ववादी विचारधारा है। यह पुद्गल या पदार्थ को प्रमुख तत्व मानता है।	1. यह बहुतत्ववादी (Pluralistic) सिद्धान्त है।
2. मन विचार व आत्मा वास्तविक है।	2. प्रकृति पदार्थ या भौतिक–जगत वास्तविक है।	2. वास्तविकता प्रक्रिया में निहित है।
3. आध्यात्मिक प्रकृति सर्वोत्तम है।	3. मनुष्य की मूल–प्रवृत्यात्मक प्रकृति उत्तम है।	3. मनुष्य निश्चित नहीं, वरन् परिवर्तनशील है।
4. सत्यम्–शिवम् सुन्दरम् अमर मूल्य है।	4. विश्व एक बड़ी मशीन है।	4. साधन को साध्य से अधिक महत्व देता है।
5. परमात्मा स्वभाव से मानसिक है।	5. केवल विज्ञान ही ज्ञान प्रदान करता है।	5. मानवीय प्रयत्न निर्णायक महत्व के हैं
6. विश्व विचार प्रक्रिया है।	6. विश्व की वास्तविक व्याख्या केवल प्राकृतिक विज्ञानों द्वारा की जाती है।	6. जो सिद्धान्त कार्य करते हैं, वे सत्य हैं।
7. चिन्तन का सर्वोत्तम स्वरूप अर्न्तज्ञान है।	7. नैतिक प्रयति, आत्म, परलोक, व्यक्तिगत अमरत्व आदि सब भ्रम है।	7. सत्य मानव निर्मित है।
8. दृष्टिकोण पूर्णतया आध्यात्मिक है।	8. दृष्टिकोण पूर्णतया भौतिक व यान्त्रिक है।	8. दृष्टिकोण पूर्णतया मानवीय है।

Scanned with CamScanner

2. शैक्षिक सिद्धान्त (Educational Principles)

1. शिक्षा आध्यात्मिक या नैतिक प्रक्रिया है।	1. शिक्षा एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।	1. शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया है।
2. परमात्म तत्व की ओर विकास।	2. बालक के वर्तमान जीवन को शिक्षा का आधार बनाया जाय।	2. बालक की क्रियाओं एवं स्व–प्रयत्नों पर बल।
3. व्यक्तित्व के उन्नयन पर बल।	3. निषेधात्मक शिक्षा पर बल।	3. जीवन की ठोस परिस्थितियों को शिक्षा का आधार बनाया जाय।
4. सामाजिक और नैतिक वातावरण पर बल।	4. भौतिक वातावरण पर बल।	4. सामाजिक एवं भौतिक वातावरण पर बल।
5. निश्चयात्मक शिक्षा।	5. निषेधात्मक शिक्षा।	5. निश्चयात्मक शिक्षा प्रयोग और अनुभव पर आधारित सामाजिक प्रक्रिया द्वारा।

3. शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education)

1. आत्मानुभूति	1. आत्माभिव्यक्ति	1. पूर्व–निश्चित उद्देश्यों की अस्वीकृति।
2. चरित्र निर्माण	2. वैयक्तिकता का विकास	2. उद्देश्य निश्चित न होकर परिवर्तनशील होते हैं।
3. सत्यम् शिवम् एवं सुन्दरम् की प्राप्ति।	3. उचित सहज सम्बद्ध क्रियाओं का निर्माण।	3. सामाजिक कुशलता पर बल।
4. आध्यात्मिक व्यक्तित्व का विकास।	4. मूल–प्रवृत्तियों का शोधन मार्गान्तीकरण और समन्वय।	4. सामाजिक व्यवस्था की उन्नति।
5. पवित्र एवं पुण्य जीवन की प्राप्ति।	5. जीवन–संघर्ष के लिए तैयारी	5. गतिशील और लचीले मस्तिष्क का निर्माण
6. सांस्कृतिक आध्यात्मिक विरासत का संरक्षण एवं	6. प्रजातीय प्रगति की प्राप्ति।	6. नये मूल्यों और आदर्शों का निर्माण

Scanned with CamScanner

उसकी समृद्धि		

4. पाठ्यक्रम (Curriculum)

1. मनुष्य के विचारों और आदर्शों पर पाठ्यक्रम का आधारित होना।	1. बालक की रूचियों, योग्यताओं और स्वाभाविक क्रियाओं को महत्व।	1. उपयोगिता का सिद्धान्त
2. शाश्वत मूल्यों अर्थात् सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का महत्वपूर्ण स्थान है।	2. बालक के विकास की विभिन्न आवयकताओं की पूर्ति।	2. बालक की रूचि का सिद्धान्त।
3. शारीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक क्रियाओं को स्थान।	3. जीवन–रक्षा सम्बन्धी विषयों की प्रधानता।	3. बालक के अनुभाव का सिद्धान्त।
4. पाठ्यक्रम के मुख्य विषय–आध्यात्मवाद, धर्म, नीतिशास्त्र, कला, संगीत, दस्तकारी।	4. पाठ्यक्रम के मुख्य विषय शरीर विज्ञान स्वास्थ्य विज्ञान भौतिक विज्ञान बाल मनोविज्ञान।	4. सीखने की प्रक्रिया का एकीकरण।
5. नीति–शास्त्र और कला नामक विषयों पर बल।	5. विज्ञान पर बल।	5. पाठ्यक्रम के मुख्य विषय स्वास्थ्य विज्ञान शारीरिक प्रशिक्षण गृहविज्ञान (बालिकाओं के लिए) विज्ञान।
6. विचार–केन्द्रित पाठ्यक्रम।	6. बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम।	6. उपयोगी विषयों पर बल।
		7. क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम।

5. शिक्षण–विधियाँ (Methods of Teaching)

1. कोई निश्चित विधि नहीं।	1. करके सीखना	1. करके सीखना
2. आदर्शवादी स्वयं विधियों के निर्धारक और निर्माणकर्ता।	2. अनुभव द्वारा सीखना	2. अनुभव द्वारा सीखना
3. प्रमुख विधियाँ वाद–विवाद प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्यानविधि पुस्तक पठन विधि।	3. खेल द्वारा सीखना	3. सीखने की प्रक्रिया में एकीकरण।
	4. प्रमुख विधियां डाल्टन किंडरगार्टन मॉन्टेसरी, ह्यूरिस्टिक।	4. प्रमुख विधि– योजना विधि

6. अनुशासन (Discipline)

1. प्रभावात्मक अनुशासन	1. प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन	1. सीमित मुक्त्यात्मक अनुशासन
2. नियन्त्रित स्वतन्त्रता	2. अनयिन्त्रित स्वतन्त्रता	2. सामाजिक अनुशासन

Scanned with CamScanner

7. बालक (Child)

1. बालक एक आत्मिक प्राणी। 2. शरीर एवं आत्मा	1. बालक प्राणी मात्र 2. शरीर पर बल	1. बालक सामाजिक प्राणी। 2. बालक शरीर एवं मनोवैज्ञानिक पक्ष के साथ उसके सामाजिक पक्ष पर बल।

8. शिक्षक (Teacher)

1.	शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान।	1.	प्रकृति ही उत्तम शिक्षक है। यदि शिक्षक का कोई स्थान है तो रंगमंच तैयार करने तथा पर्दे के पीछे रहने वाले के रूप में।	1.	शिक्षक सामाजिक वातावरण के रूप में।
2.	शिक्षक एक माली के रूप में।			2.	शिक्षक सामाजिक परिस्थितियों का निर्माणकर्ता परामर्शदाता एवं मार्गदर्शक।

9. विद्यालय (School)

1	मानव क्रियाओं का आदर्श लघु रूप।	1.	प्राकृतिक या स्वाभाविक वातावरण के रूप में।	1.	समाज का लघु रूप।
2.	बाग के रूप में।	2.	स्वच्छन्द वातावरण।	2.	सामुदायिक जीवन का केन्द्र।

प्रशिक्षु चर्चा करें–

वर्तमान भारतीय शिक्षा के पुनर्निमाण के लिए कौन सी दार्शनिक विचार धारा एक उचित आधार प्रदान कर सकती है? क्यों?

Scanned with CamScanner